शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सिंगाजी का काव्य और ग्रामीण जीवन

कवीन्द्र कुमार भारद्वाज
अतिथि विद्वान
भाषा विभाग (हिन्दी)
शासकीय होलकर विज्ञान महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भक्ति आंदोलन नवचेतना का द्योतक है। इसके साथ भारतीय समाज,संस्कृति और साहित्य के विकास का नया चरण प्रारंभ होता है। भक्ति आंदोलन व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन है जो स्वयं को धर्म, साहित्य, भाषा, संस्कृति ललित कलाओं में अभिव्यक्त करता है। यह अभिव्यक्ति अभिजात्य के विरुद्ध और लोक के पक्ष में मुखर होती है। भक्ति आंदोलन के केन्द्र में भक्तिकाव्य है। भक्तिकाव्य जन -संस्कृति का उन्मेष है। प्रस्तुत शोध पत्र में नीमाड के लोकप्रिय संत कवि सिंगाजी के काव्य में ग्रामीण चेतना पर विचार किया गया है

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

जन-संस्कृति कहीं न कहीं ग्रामीण संस्कृति से पोषित होती है। भारत गाँवों का दे श है। भक्ति काव्य में ग्रामीण जीवन प्रमुखता से काव्य में अपने पद -चिह्न अंकित करते हुए दिखायी देता है। कबीर, सूर, तुलसी से लेकर सिंगाजी तक यह परिदृश्य विस्तीर्ण है।

सिंगाजी का जन्म ग्राम खजूरी (वर्तमान बड़वानी जिला) में संवत् 1576 विक्रम (1519 ई)1 में हुआ था। सिंगाजी निमाड़ के कवि हैं। उनके काव्य में निमाड़ का ग्रामीण जीवन अभिव्यक्त हुआ है। 'सिंगाजी निमाड़ के लोक जीवन की धड़कन हैं। निर्गुण कवि सिंगाजी ग्रामीणों के लिए एक मिथ में बदल चुके हैं।"2 कई बार ऐसा भी होता है कि साहित्य में ग्रामीण जीवन होता है लेकिन ग्रामीण जीवन में वह साहित्य नहीं होता। लेकिन सिंगाजी के साथ ऐसा नहीं है। यह कवि अपने व्यक्तित्व एवं कविता के साथ पूरी ताकत से ग्रामीण जीवन में उपस्थित है।

हम लोगों के लिए सिंगाजी भले ही एक संत कवि हों लेकिन हमारे लोक में वे एक देवता के रुप में परिवर्तित हो गये हैं। ग्रामीणों का कोई पशु खो जाये या गाय, भैस दूध देना बंद कर दे, फसलों पर कोई संकट आ जाए तो वे सिंगाजी की शरण में ही जाते हैं। पशु खो जाने या लहलहाती फसलों के लिए वे सिंगाजी पर प्रसाद चढ़ाने की मनौती लेते हैं और गाय - भैंस दूध न दे तो सिंगाजी के नाम का डोरा पहनाते हैं। यह बातें ग्रामीण कृषकों और सिंगाजी के संबंधों को व्याख्यायित करती हैं।

निमाड़ की गूजर आदि बड़ी-बड़ी ग्रामीण जातियों की पंचायतों में आज भी सिंगाजी को साक्षी मानकर ही सारे फैसले होते हैं।पश्चाताप से युक्त अपराधी को यह कहकर छोड़ दिया जाता है- "जा सिंगाजी का पाय लागी ल(संत सिंगाजी के पैर पकड़ लो,सब अपराध मिट जायेंगे)"3

संत सिंगाजी के काव्य को 'भजन' कहा गया है। इनके काव्य में निमाड़ी निर्गुण मार्ग के भजन

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आते हैं, जिन्हे आज भी गाया जाता है '।4 आज भी इनके भजन के बगैर निमाड़ी ग्रामीण जीवन अधूरा-सा है।

सिंगाजी के काव्य में ग्रामीण रूपक

सिंगाजी के काव्य में लोक जीवन के रुपकों का उपयोग बड़ी ही कुशलता से हुआ है। सिंगाजी पशुपालक एवं कृषि-कर्म से सीधे जुड़े थे, इसलिए उनके काव्य में सारे रूपक,प्रतीक इन्हीं क्षेत्रों से आते हैं। ये ग्रामीण जीवन के रुपक साधन के रुप में आते हैं और साध्य होता है निर्गुण ब्रह्म। सिंगाजी कृषकों के लोकप्रिय कवि हैं। उनके काव्य में कृषि-कर्म से संबंधित रूपक भी मिलते हैं। एक उदाहरण दृष्टव्य है जिसमें वे हरि नाम की खेती करने की सलाह दे रहे हैं। वे बता रहे है कि इस खेती में बहुत लाभ है। पाप का पालवा (कटिली झाड़ियाँ) कटवा लेना और बाहर फेंक देना। कर्म की कास(एक घास) बिनवाकर खेती को निर्मल कर लेना। श्वास-प्रश्वास दो बैल हैं जिनको सुरति की रास लगाओ और प्रेम की पिराणी(एक बांस जिससे बैलों को हांका जाता है) हाथ में रखो तथा उन बैलों को ज्ञान की आर लगाओ। ओम का बक्खर जोतिए और मूलमंत्र रुपी बीज को खेत में बोइए। सत् का मांडवा बनाओ और उसमें धर्म की सीढ़ी लगाओ। उस पर चढ़ कर ज्ञान के गोले फेंकिये जिससे इस फसल को नुकसान पहुंचाने वाले पक्षी उड़ जाए-

'खेती खेड़ो रे हरि नाम की ,जा म मुकतो है लाभ।।

पाप का पालवा कटावजो,काठी बाहर राल।
कर्म की कास एचावजो,खेती निरमल होय।।
आस स्वास दोई बैल है,सुरती रास लगाव।
प्रेम पिराणो कर घरो,ज्ञान की आर लगाव।।
ओहम् बक्खर जूपजो,खेती लट लूम होय।
सत को माडो रोपजो,धरम की पपड़ी लगाव।
ज्ञान का गोला चलावजों,सुआ उड़ी-उड़ी जाय।।5

स्पष्ट है,किस प्रकार ग्रामीण जनों को उन्हीं की भाषा,उन्हीं के कृषि-कर्मो के रुपक के द्वारा सिंगाजी ने ब्रह्मतत्व का ज्ञान जन-जन तक पहुंचाया। सिंगाजी किसान जीवन के कवि हैं। निमाड़ की तपती दुपहरी की तरह ज्ञान के ताप से उनका काव्य दमक रहा है।किसानों के स्वेद कण की तरलता सिंगाजी के काव्य में ठोस शब्द बनकर आते हैं और ये ठोस शब्द कृषि कर्मरत ग्रामीणों को ज्ञान दशा की ओर ले जाते हैं। जब कृषक हल जोत रहे होते हैं तो सिंगा वाणी का अनुगूंजन होता है- 'खेती खेड़ो रे हरि नाम की '- शारीरिक चेष्टा कृषि कर्म की होती है और मानसिक दशा ज्ञान की। कोई कर्मकांड नहीं है वरन् कर्मरत रहते हुये ज्ञान दशा में प्रवेश है।ऐसा प्रवेश सिंगा वाणी की सहजता से ही संभव है।

ग्रामीण जीवन में पशुपालन एक महत्वपूर्ण तथ्य है। सिंगाजी स्वयं भी पशुपालक थे। इनके काव्य में पशुओं से संबंधित रूपक भी मिलते हैं।

जैसे गाय का रूपक-

'बरन-बरन की गउ दुहाई,एक बासन में धरना।
माखन माखन संतो ने पाया ,बासण का क्या करना।।6

अर्थात् अनेक रंगों की गायों का दूध दुह कर एक बर्तन में रख दिया है। संतों ने माखन प्राप्त कर लिया है। अब इस बर्तन का कोई काम नहीं है। यहाँ अनेक रंगों की गायों से तात्पर्य षटचक्र की पंखुड़ियों के विभिन्न रंगों से है। इन षटचक्रों से जो सत्व निकला है , वह शरीर रूपी बर्तन में इकट्ठा है। उसमे जो ब्रह्मानंद रूपी माखन बना है, उसे संतों ने प्राप्त कर लिया है , अब इस खाली बर्तन रूपी शरीर का कोई काम नहीं बचा। शरीर और ब्रह्म का द्वैत समाप्त हो गया। देह से विदेह की यात्रा पूर्ण हुई।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सिंगाजी अपने प्रतीक,बिम्ब, रूपक ग्रामीण जीवन से उठाते हैं। जैसे झूले का रूपक-

'राम नाम की डोर लगी है-म्हारे सतगुरु सामण झूले।

पांच सखी मिल मंगल गावे , मनुआताल बजावे।।'7

झूलों के प्रति ग्रामीणों का वि शेष आकर्षण रहा है। निमाड में सावन में झूले बांधे जाते हैं। स्त्रियाँ बच्चे झूला झूलते है। आनंद उठाते हैं। लोक के झूलों को सिंगाजी ने अलौकिक अर्थ दिया है।

निष्कर्ष

सिंगाजी के यहाँ कहीं पनिहारी का जिक्र आता है, कही खेती-बाड़ी , पशुओं का , कही जल बीच गगरी' का; कुल मिलाकर पूरा ग्रामीण परिवेश उनके काव्य में देखा जा सकता है। माखनलाल चतुर्वेदी जी ने लिखा है- "सिंगाजी की वाणी बे इख्तियार निकलती है-उसमें यद्यपि अलंकारों का प्रदर्शन नहीं ,किंतु वह इतने सीधे-सच्चे ढ़ंग से कही जाती है कि वह सीधे मर्म को छू लेती है।"8 सिंगाजी की यह मर्मभेदी वाणी आज भी ग्रामीणों का कंठ हार बनी हुई है। सिंगा जी के काव्य में ग्रामीण जीवन है और ग्रामीण जीवन में भी उनका काव्य आज भी सुना जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1.कवीन्द्र कुमार भारद्वाज , लघु शोध प्रबंध , भक्ति आन्दोलन और सिंगाजी का काव्य पृष्ठ-58-भारतीय भाषा केन्द्र जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नईदिल्ली

2.कवीन्द्र कुमार भारद्वाज , लघु शोध प्रबंध भक्ति आन्दोलन और सिंगाजी का काव्य पृष्ठ-76, भारतीय भाषा केन्द्र जवाहरलाल नेह रू विश्ववि द्यालय, नईदिल्ली।

3.रमेशचंद्र गंगराडे, निमाड़ के संत कवि सिंगाजी, पृष्ठ 63, हिन्दी साहित्य भंडार ,लखनऊ, प्रथम संस्करण 1996.

4.डॉ.नगेन्द्र संपादक, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 133-मयूर पेपर बैक्स नईदिल्ली संस्करण 1991 ।

5.श्रीराम परिहार(संकलनकर्ता)-कहे जन सिंगा, पृष्ठ 44 -म.प्र. आदिवासी लोककला परिषद भोपाल , तृतीय संस्करण 1997.

6.श्रीराम परिहार(संकलनकर्ता)- कहे जन सिंगा , पृष्ठ 78- म.प्र. आदिवासी लोककला परिषद भोपाल , तृतीय संस्करण 1997.

7.श्रीराम परिहार(संकलनकर्ता)- कहे जन सिंगा पृष्ठ 39, म.प्र. आदिवासी लोककला परिषद भोपाल, तृतीय संस्करण 1997.

8.रमेशचंद्र गंगराडे, निमाड़ के संत कवि सिंगाजी, पृष्ठ 68, हिंदी साहित्य भंडार,लखनऊ प्रथम संस्करण 1996।